

आखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज

रविवार 18 दिसंबर 2022

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतश्चिति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेट

किसी और देश की एक इंच जमीन पर कछा करने का इसादा नहीं स्वते, भारत की अर्थव्यवस्था तेजी के साथ आगे बढ़ रही है: राजनाथ सिंह

'जवानों ने पराक्रम को साहित किया'



नई दिल्ली: रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने फेडरेशन ऑफ चैर्चस ऑफ कॉर्मर्स एंड इंडस्ट्री के 95वें वार्षिक सम्मेलन में अपने संबोधन के दौरान कहा कि, भारत की अर्थव्यवस्था तेजी के साथ आगे बढ़ रही है। राजनाथ ने कहा कि, प्रधानमंत्री ने लाल किले से अपने संबोधन के दौरान देश को पांच संकल्पों के बारे में बताया था, जो भारत को सुपर पावर बनाने के लिए आवश्यक हैं। राजनाथ सिंह ने कहा कि, ये नहीं माना जाना चाहिए कि हम किसी देश पर हावी होना चाहते हैं या किसी देश की एक इंच जमीन पर कब्जा करने का इसादा रखते हैं। उन्होंने ये भी कहा कि, गलवान हो या तवांग, हमारे रक्षा बलों ने अपनी वीरता और पराक्रम को साहित किया है।

पीएम ने की थी पांच संकल्पों की बात: राजनाथ सिंह ने कहा कि, प्रधानमंत्री ने 'पंच प्रण' यानी पांच संकल्पों की बात की थी जिनमें पहला-विकासी भारत का निर्माण, दूसरा-गुलामी की हर सौच से मुक्ति, तीसरा-विरासत पर गर्व, चौथा-कृति और एकूणता और पारक्रम के बारे में बताया था, जो भारत को सुपर पावर बनाने के लिए आवश्यक हैं। राजनाथ सिंह ने कहा कि, ये नहीं माना जाना चाहिए कि हम किसी देश पर हावी होना चाहते हैं या किसी देश की एक इंच जमीन पर कब्जा करने का इसादा रखते हैं। उन्होंने ये भी कहा कि, गलवान हो या तवांग, हमारे रक्षा बलों ने अपनी वीरता और पराक्रम को साहित किया है।

पीएम ने की थी पांच संकल्पों की बात: राजनाथ सिंह ने कहा कि, प्रधानमंत्री ने 'पंच प्रण' यानी पांच संकल्पों की सुची में भी नहीं था। 2014 में भारत विश्व अर्थव्यवस्थाओं में 9वें स्थान पर था। आज भारत 3.5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के कर्तव्य और दुनिया में 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।

विश्व कल्याण के लिए सुपर पावर बनने की मंशा: रक्षा मंत्री ने कहा कि हम विश्व कल्याण के लिए महाशक्ति बना चाहते हैं। सिंह ने कहा कि हम किसी देश नहीं माना जाना चाहिए कि हम किसी देश पर हावी होना चाहते हैं या हम किसी दूसरे की एक इंच जमीन पर भी कब्जा करना चाहते हैं। हम आगे बढ़ते हैं। उन्होंने ये भी कहा कि, गलवान हो या तवांग, हमारे रक्षा बलों ने अपनी वीरता और पराक्रम को साहित किया है।

दुनिया में 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है भारत:

रक्षा मंत्री ने कहा कि, हम दुनिया के कल्याण के लिए काम करने के लिए एक महाशक्ति बनना चाहते हैं। उन्होंने

दुसरे की एक इंच जमीन पर भी कब्जा करना चाहते हैं। हम आगे बढ़ते हैं। हम आगे बढ़ते हैं। उन्होंने

कुटुंबकर्म का संदेश भारत ने पूरे विश्व को एक जुट्टा के ढोकलाम इड़प पर दौरान

कुटुंबकर्म का संदेश भारत ने पूरे विश्व

संस्कृति में विश्वास करते हैं। उन्होंने

कोलकाता, एजेंसी केंद्रों गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को 25वीं पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की बैठक की अध्यक्षता की। इस दौरान उन्होंने मुख्यमंत्रियों से जी-20 से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान अपने राज्यों की सांख्यिकीय विविधता और पर्यावरण स्थलों की दुनिया के सामने प्रदर्शित करने का आग्रह किया।

कोलकाता, एजेंसी केंद्रों गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को 25वीं पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की बैठक की अध्यक्षता की। इस दौरान उन्होंने राज्यों के मुख्यमंत्रियों से आलों एक वर्ष के दौरान उनके राज्यों में अधिकत होने से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान अपने राज्यों की

कार



संपादकीय

उम्र से जुड़े इंतजार में दो बिल

उम्र को लेकर सियासत हमेशा सतक रहती है। इस घटाने-बढ़ाने के साथ-साथ वह अपने बोटों का गणित भी साधती रहती है लेकिन जब मामला सेहत और सशक्तिकरण का हो तो फैसले लटकने नहीं चाहिए। उम्र से जुड़े यूं तो दो विधेयकों पर फैसले लौटत हैं लेकिन एक को लंबे समय से अंतिम फैसले का इंतजार है। फिलहाल बात उस बिल की जो युवा शक्ति को कम उम्र में चुनाव लड़ने की सहृदयत देना चाहता है। इससे पहले की सरकारों ने बोट देने की उम्र को 21 से घटाकर 18 वर्ष किया था। इस बार जिस मामले से उम्र जुड़ बैठी है वह चुनाव लड़ने की है। अब सरकार लोकसभा और विधानसभा के लिए उम्मीदवार की उम्र 25 से 21 या 18 कर देने का मन बना रही है। सदन के एक सदस्य ने निजी हैसियत से ऐसा बिल पेश किया है जिसमें सांसद और विधायक के और युवा होने का ब्लौरा है। तर्क यह है कि जब देश की 65 फीसदी आबादी 35 से कम उम्र की है तब क्यों नहीं उन्हें चुनाव लड़ने का हक भी मिलना चाहिए? दूसरा तर्क यह है कि जब 18 की उम्र में वह नेता को चुन सकता है तो खुद नेता क्यों नहीं बन सकता? तीसरा तर्क है कि जब पंचायत और नगर निकायों का चुनाव 21 साल की उम्र में लड़ा जा सकता है तब सांसद और विधायक का क्यों नहीं? इन तर्कों के विश्लेषण से पहले एक तथ्य यह कि हमारी लोकसभा एक बुजुर्ग सदन है जहाँ फिलहाल 543 में से केवल आठ सांसद ही तीस की उम्र के हैं। साफ है कि इच्छाशक्ति की कमी सियासी दलों में ही है। नया कानून बन भी जाएगा लेकिन ये टिकट युवाओं को देंगे, इसमें संशय रहेगा। देखा गया है कि उम्मदराज नेता अपनी सीट छोड़ना नहीं चाहते। ऐसा कभी नहीं देखा गया कि किसी सांसद ने जीते जी अपनी सीट किसी युवा के लिए छोड़ी हो। बीते शुक्रवार राष्ट्रीय लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद चौधरी जयंत सिंह ने निजी हैसियत से संविधान संसोधन के लिए एक बिल पेश किया जिसमें चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवार की उम्र 25 से घटाकर 21 साल करने की बात थी बिल के पक्ष में 'ह' की आवाज ज्यादा थी इसलिए इसे स्वीकार कर लिया गया। चौधरी जयंत सिंह ने बाद में ट्रीट किया- 'युवा भारत को राजनीतिक मुख्यधारा में लाने के लिए मेरी पहल। सिफ़ मतदान नहीं, विधानपालिका में सदस्य के रूप में देश को कुशल नेतृत्व प्रदान करने का अधिकार।'

भ्रष्टाचारियों से कैसे निपटें?

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

सुप्रीम कोर्ट ने रिश्वतखोर सरकारी नौकरों के लिए नई मुसीबत खड़ी कर दी है। अब उनका अपराध सिद्ध करने के लिए ऐसे प्रमाणों की जरूरत नहीं होगी कि रिश्वत देनेवाला और लेनेवाला खुद स्वीकार करे कि वे रिश्वत दी है और मैंने रिश्वत ली है। यदि वे खुद स्वीकार न करें या अपने कथन से पलट जाएं या उनमें से कोई मर जाए तो भी अदालत को न्याय जरूर करना होगा। अदालतों को चाहिए कि वे दूसरे प्रमाणों की खोज भी करें। जैसे गवाहों से पूछें, बैंक के खाते तलाशें, रिश्वतखोरों की चल अचल-संपत्तियों का ब्योरा इकट्ठा करवाएं, उनके परिवारों के रहन-सहन और खर्चों का कच्चा चिट्ठा तैयार करवाएं, सरकारी कागजातों को खंगलवाएं आदि कई प्रमाणों के आधार पर रिश्वत के लेन-देन को पकड़ जा सकता है। अब तक रिश्वत के कई मामले रास्ते में ही बिखर जाते रहे हैं, लेकिन रिश्वत विरोधी कानून की इस नई व्याख्या के कारण अब ज्यादा मामले पकड़े जा सकेंगे। लेकिन भारत में रिश्वतखोरी यानी भ्रष्टाचार तो राजनीतिक शिष्टाचार बन चुका है। इसका बोलबाला तो हमारे पड़ोसी देशों में इतना ज्यादा है कि हम भारतीय उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। कुछ देशों के नेताओं, फौजियों और अफसरों के ठाठ-बाट देखकर आप अपने आप से पूछेंगे कि ये लोग क्या अब रपति या खरबपति हैं? नेताओं की चोटी से निकली भ्रष्टाचार की वैतरणी नदी सरकार के चपरासी तक सबको गंदा करती चली जाती है। सुप्रीम कोर्ट ने इस स्थिति पर गंभीर चिंता जताई है। स्वयं न्यायपालिका भी भ्रष्टाचार की इस वैतरणी में गोता खाने से बाज नहीं आ पाई है।

भ्रष्टाचार ने हमारी राजनीति, प्रशासन, न्याय और सार्वजनिक जीवन को भी अपनी गिरफ्त में ले लिया है। सर्वोच्च न्यायालय ने फिलहाल जो कानूनी सुधार सुझाया है, उसका थोड़ा-बहुत असर जरूर होगा लेकिन भ्रष्टाचार को यदि जड़-मूल से खत्म करना है तो हमें कई अत्यंत कठोर कदम उठाने होंगे। सबसे पहले तो नेताओं और अफसरों और उनके परिजन की चल-अचल संपत्ति तथा आय-व्यय का ब्योरा प्रतिवर्ष सार्वजनिक करना अनिवार्य किया जाए। दूसरा, भ्रष्ट नेताओं और अफसरों पर चलने वाले मुकदमों के फैसलों की समयावधि तय की जाए। तीसरे, कुछ अत्यंत भ्रष्ट नेताओं, अफसरों और भ्रष्टाचार करनेवालों को आजीवन कारावास और फांसी की सजा भी दी जाए ताकि भावी भ्रष्टाचारियों के रोंगटे खड़े हो जाएं। चौथा, देश में सालगी और अपरिग्रह के आदर्शों का प्रचार खुद राजनेता, संपन्न सेठ लोग, नौकरशाह, धर्मधर्जीगण भी करें और अपना जीवन वैसा ही बनाकर लोगों के सामने जीवंत उदाहरण भी पेश करें।

(लेखक, भारतीय विदेश नीति परिषद के अध्यक्ष हैं।)

चीन पर घटानी ही होगी भारत की आत्मनिर्भरता

आर.के. सिन्धा

भारत के जांबाज सैनिकों ने पिछली 09 दिसंबर को चीन के गले में अंगूठा डाल दिया था। बात-बात पर धौंस जमाने वाले चीन को गलवान के बाद भारत ने तवांग में उसकी कायदे से अपनी औकात समझा दी। भारतीय सैनिकों ने चीनियों की कसकर भरपूर धुनाई की। लेकिन तवांग में चीन ने जो कुछ देखा वो तो महज एक झांकी है। जरूरत पड़ी तो भारत कसकर चीन को कसने के लिए तैयार है। पर यह कहना होगा कि भारत और चीन के बीच की जंग दुनिया की सबसे कठिन जंग होगी। दानों देशों ने आपस में समझौता कर रखा है कि बट्टूक तो बट्टूक कोई तलवार तक नहीं निकालेगा म्यान

युद्ध हो सकता है। 1967 में नाथूला की जंग में चीन के चार रक्षक से अधिक सैनिक मारे गए थे तब चीन बट्टूकबाजी से डरता है औ भारत तो हमेशा से उदारमना है वै हंगौतम बुद्ध और गांधी का देश भारत तो किसी से खुद तो पंग लेता न नहीं है। दूसरी तरफ मैकमोहन रेखा को चीन स्वीकार नहीं करता है। वै भी 1962 के बाद से चीन मैकमोहन रेखा के इस पार ही डूब हुआ है। अब तक लाइन ऑफ कट्रोल (एलएसी), जिसे वास्तविक नियंत्रण रेखा भी कहते हैं, पर सहमति नहीं बन पाई है। एलएसी का मतलब ही है वास्तविक नियंत्रण रेखा यानी जो जब जहां नियंत्रण व कर ले। अब भारत क्या करे? भारत

नुकीली गदा बना ली है। चीनी कंटीले तार वाले डडे लेकर आते हैं और भारतीय लंबी गदा। दुर्योधन और भीम की तरह युद्ध होता है। फिर बाकायदा फ्री स्टाइल कूश्ती भी होती है। भारत ने अपने लंबे तगड़े जाट, सिख और राजपूत लगा रखे हैं जो मल्ल युद्ध में चीनियों को फुटबॉल बना देते हैं। कभी-कभी पथरबाजी भी होती है। यह पाण्डिकालीन युद्ध का एक आधुनिक नमूना है। अब मीडिया तमाम मिसाइलें और राफेल की एक्सरसाइज दिखा रहा है, जिनका कोई मतलब नहीं है सिवाय नागरिकों का मनोबल ऊचा करने के। जब गोली नहीं चला सकते तो मिसाइल कौन चलाएगा। तो मानकर

रहद पर शांति की उम्मीद तो एक
की ही संभावना है। इसी तरह से
मौमा विवाद भी हल होने में न जाने
करने साल या दशक लग जाएं।
वेन हमारी डिप्लोमेसी की परीक्षा
तो ही रहेगा। हमें धैर्य से चलना
गग और हैल-हैले कदम बढ़ाने
पर्हें, एक दम वैसे ही जंगल में बाघ
लता है। लेकिन, जब जरूरत पड़े
बाघ वाली छलांग भी लगनी
गयी। चीन, भारत के लिए किसी
साध्य रोग से कम नहीं है। हमारी
रक्षा के लिहाज से सबसे बड़ा
वतरा है चीन। चीफ ऑफ डिफेंस
टाफ (सीडीएस) जनरल बिधिन
वत ने एक बार कहा था कि भारत
लिए चीन सुक्ष्मा के लिहाज से
ड़ा खतरा बन गया है और हजारों

श ने हिमालय की सीमा को तक करने के लिए भेजे थे, लंबे तक बेस पर वापस नहीं लौट। जनल रावत ने चीन को कुछ ऐसा कहा कि चीन को कष्ट हुआ। तिलमिलाए चीन ने के बयान पर कहा- ह्यभारत किसी कारण के तथाकथित सैन्य खतरे पर अटकले गए हैं, जो दोनों देशों के नेताओं गणतानिक मार्गदर्शन का गंभीर बन है। चीन को लेकर भारत रक्षामंत्री भी देश को आगाह करके हैं। जॉर्ज फर्नांडीस ने चीन भारत का सबसे बड़ा दुश्मन था। पोखरण-2 परमाणु ग के बाद तत्कालीन एनडीएर के रक्षा मंत्री जॉर्ज फर्नांडीस

र बरता जान रा ही रहे, म अधिकतर पह आम जनता नहीं। कौन स लिए है। कौन का हकदार है सभा का सदस्स है, कौन नहीं। लोगों के पार बुनियादी अधिकार राजशाही की रहते थे। गुजर चुनावों में मिल तारीख को भूमि मुख्यमंत्री पद सामान्य राजनैति जब कोई द करता है, तो वो

जनतंत्र खत्म होने की कीमत

सर्वमिति राजशाही के बरसों आम ले ही रहे, मैं अधिकतर पहचान आम जनता नहीं। कौन से लिए हैं। कौन का हकदार है, सभा का सदस्य है, कौन नहीं। लोगों के पास बुनियादी अधिकार राजशाही की रहते थे। गुजरात चुनावों में मिलने तारीख को भूमि मुख्यमंत्री पद सामान्य राजनैतिक जब कोई दस्तावेज़ करता है, तो उसे

चुनते हैं, जो मुख्यमंत्री बनाया जाता है। पद संभालने के लिए शपथग्रहण की प्रक्रिया भी तय है और उसी मुताबिक भारत के विभिन्न राज्यों में निर्वाचित सरकारों के मुख्यमंत्री शपथ लेते आए हैं। बदलते वक्त के साथ शपथग्रहण समारोह भव्य से भव्यतम होने लगे। इन्हें शक्तिप्रदशन का जरिया बनाया जाने लगा। जिस राज्य में जितना अधिक बहुमत मिले, उस राज्य में उतने बड़े पैमाने पर शपथग्रहण के तामाज़ाम होने लगे। चुनाव जीतने के लिए फहले प्रचार में पैसा पानी की तरह बहाया जाता है, उसके बाद जीत मिल गई, तो उसका उत्सव मनाने के लिए बेदर्दी से करोड़ों रुपए खर्च किए जाते हैं। लेकिन जब जनता के हितों का सताल आप तो बज्जट का गेना

